राज्य अध्याय 37

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता प्राप्त करने और उसकी आवाज़ सुनने के लिए उसके मार्गदर्शन हेतु ***प्रार्थना करें।*** अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने से सम्बंधित इस पाठ को प्रभु के हांथों में सौंपे।

2	**साझा करें** (20 मिनट)	*[शांत समय]* **यशायाह 48, 49, 52 और 53**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें (या*** अपने नोट्स से ***पढ़ें)*** कि अपने दिये गये अनुच्छेद (यशायाह 48, 49, 52 और 53) से शान्त समय में क्या सीखा। अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	**स्मरण करें** (5 मिनट)	*[परमेश्वर के संसाधन]* **(1) इब्रानियों 13:5-6**

स्मरण वचनों की बारहवीं श्रंखला ठ "परमेश्वर के संसाधनों" के बारे में बताती है ।पांच स्मरण वचन इस प्रकार हैं:

1. परमेश्वर की उपस्थिति। इब्रानियों। 13:5-6
2. परमेश्वर का वचन। भजन सहिंताः 119:105
3. परमेश्वर की सामर्थ्य। यशायाह 40:10
4. परमेश्वर की बुद्धि। याकूब 1:5
5. परमेश्वर की चंगाई। 2 इतिहास 7:14

दो-दो करके *पुनरावलोकन करें।*

(1) परमेश्वर की उपस्थिति। इब्रानियों 13:5ब-6। परमेश्वर ने कहाः "मैं तुझे कभी न छोड़ूँगा, और न कभी त्यागूँगा।" इसलिये हम निडर होकर कहते हैं, "प्रभु मेरा सहायक है, मैं न डरूँगा; मनुष्य मेरा क्या कर सकता है।"

4	**शिक्षा देना** (85 मिनट)	*[यीशु के दृष्टान्त]* **एक चतुर प्रबंधक**

लूका अध्याय 16:1-13 में "चतुर प्रबन्धक का दृष्टान्त",

परमेश्वर के राज्य में भंडारीपन

में बताने वाला दृष्टान्त है

"एक दृष्टान्त" स्वर्गीय अर्थ को समझाने के लिए एक ज़मीनी या भौतिक कहानी होती है। यह कहानी जीवन से जुड़ी हुई सच्ची घटना या काल्पनिक कहानी होती है, जिससे एक आत्मिक सच्चाई को सिखाया जाता है। यीशु ने सार्वजनिक स्थलों

और रोज़ मर्रा की ज़िन्दगी से जुड़ी चीज़ों व घटनाओं का इस्तेमाल परमेश्वर के राज्य के भेदों को प्रगट करने और लोगों को उनकी असलीयत दिखाने और उन्हें अपने जीवन में परिवर्तन की आवश्यकता बताने के लिए किया। हम इस दृष्टान्त का अध्ययन करने वाले छः निर्देशों के आधार पर करेगें (नियमावली 9, परिशिष्ट 1 को देखें)।

पढ़ें। लूका 16:1-13।

---

1. दृष्टान्त की प्राकृतिक कहानी को समझें।

परिचय। दृष्टान्त को आलंकारिक भाषा में बताया गया है और दृष्टान्त का आत्मिक अर्थ उसी पर आधारित है। इसलिए हम पहले शब्दों और कहानी की पृष्ठभूमि के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक तथ्यों का अध्ययन करेंगे।

चर्चा करें। कहानी के वास्तविक तत्व क्या हैं?

ध्यान दें।

एक धनवान व्यक्ति। वह शायद एक बड़ी संपत्ति का मालिक था। हमें यह मानना चाहिए कि वह ईमानदार आदमी था, क्योंकि वह नहीं, लेकिन उसका प्रबंधक बेईमान था।

एक प्रबन्धक। वह एक घरेलू प्रबंधक, अर्थशास्त्री या खजांची था, जिसे संपत्ति के कारोबार की देखभाल करने का जिम्मा दिया जाता था। इस प्रबंधक पर अपने स्वामी की संपत्ति बर्बाद करने का आरोप लगाया गया था। हमें यह नहीं बताया गया है कि किसने उस पर आरोप लगाया और उसने अपने मालिक की संपत्ति कैसे बर्बाद की। वह दोषी रहा होगा, क्योंकि प्रबंधक ने उसकी मासूमियत का जोर से विरोध नहीं किया था।

एक भण्डारी। वे शायद संपत्ति के एक टुकड़े के किराएदार थे। उन्होंने मालिक को उनकी वार्षिक उपज की एक निश्चित राशि देकर उनके किराए का भुगतान किया। वे उधार पैसे भी ले सकते थे या मालिक से उधार पर सामान खरीद सकते थे। फिर भी, प्रत्येक देनदार के पास संपत्ति के मालिक के लिए काफी राशि बकाया है।

अपने भण्डारीपन का लेखा देना। मालिक ने भंडारी से मांग की कि वे मालिक के पास अपनी खाता-बही समर्पित करे कि वे संपत्ति के व्यापार मामलों को कैसे प्रबंधित करते हैं। प्रबंधक पर धोखाधड़ी का आरोप नहीं लगाया गया था, लेकिन लगभग निश्चित रूप से कुप्रबंधन हुआ है। वह अपने स्वामी की संपत्ति को बर्बाद कर सकता था, या वह लापरवाह और लापरवाह हो सकता था। संपत्ति का मालिक अपने प्रबंधक की नौकरी को समाप्त करना चाहता था और उसे जाने से पहले खाता-बही देने का एक अवसर देना चाहता था।

प्रबन्धक ने क्या किया। निकाले जाने के बाद प्रबंधक चुप रहा। इस प्रकार उसने अपना अपराध स्वीकार किया। सबसे पहले, वह एक नुकसान में था कि क्या करना है। वह शारीरिक श्रम के लिए पर्याप्त मजबूत नहीं था और उसे अन्य लोगों की दया पर निर्भर होने में शर्म आती थी। तब उसके मन में एक उज्ज्वल विचार आया और उसने एक योजना तैयार की। वह कुछ खास लोगों पर उपकार करेगा, ताकि बाद में वे इस उपकार का बदला चूका सकें। वह मालिक के वित्तीय ऋण को कम करेगा, ताकि बाद में वे उसे आर्थिक रूप से मदद करें।

उनके बिलों पर राशियों को बदलना। इन “कागजातों में ” में देनदारों द्वारा हस्ताक्षरित ऋणों की स्वीकृति को लिखा गया

था। उस में आधुनिक बैंक कार्यवाही के समान देनदारों द्वारा "मैं आपका देनदार हूँ" लिखकर हस्ताक्षर किए गए थे। जिस समय उसने कर्ज लिया, देनदार ने एक लिखित बयान दिया कि उस पर मालिक की एक निश्चित राशि बकाया है और वह उसका भुगतान करने के लिए बाध्य है। बेईमान प्रबंधक ने अपने मालिक के कर्जदारों को एक-एक करके बुलाया और उनके बिलों को अपने फायदे के लिए और अपने मालिक के नुकसान के लिए बदल दिया। यह कैसे किया गया, कहा नहीं गया है। मूल लिखित कथन संभवतः मोम की पट्टियों पर रहे होंगे, ताकि मोम को पिघलाया और फिर से लिखा जा सके। यदि वे कागज पर लिखे गए थे, तो पुराने को पूरी तरह से नष्ट कर दिया गया होगा और नए बिल, जिसमें ऋणों की मात्रा काफी कम हो गई थी, को बनाया गया होगा जिससे उस पर हस्ताक्षर किए जा सकते थे।

देनदार शायद नहीं जानते होंगे कि यह बेईमानी थी। फसलों को प्रभावित करने वाले प्रतिकूल मौसम की स्थिति के कारण, ऋण को कम करना एक संपत्ति के मालिक के लिए असामान्य नहीं था। इसके अलावा, देनदारों ने सोचा होगा कि प्रबंधक मालिक के निर्देशों का पालन कर रहा है।

स्वामी ने उस अधर्मी भण्डारी की सराहना की। "स्वामी" ने प्रबंधक की प्रशंसा की, इसलिए नहीं कि वह बेईमान था, बल्कि इसलिए कि उसने *चतुराई* से काम लिया था। स्वामी" संपत्ति के मालिक (वचन 3 और 5) को दर्शाता है, यीशु को नहीं। यीशु कहानी कह रहे थे और उन्होंने कहा कि मालिक या स्वामी ने अपने बेईमान प्रबंधक की प्रशंसा की क्योंकि वह बहुत चतुर था और *दूरदर्शिता के साथ* काम करता था। उसने अपने भविष्य के लिए *आगे की योजना बनाई* थी। यह एक बहुत ही चतुर, *कुशल या बुद्धिमानी का* काम था! मालिक वास्तव में कागजातों को अपनी मूल स्थिति में वापस नहीं बदल सकता था, क्योंकि उस समय तक हर कोई यह सोचता था कि मालिक अपने देनदारों के प्रति बहुत दयालु था।

2. तत्काल संदर्भ की जांच करें और दृष्टान्त के तत्वों को निर्धारित करें।

परिचय। दृष्टांत की "कहानी" का संदर्भ "स्थान" और "दृष्टान्त की व्याख्या या अनुप्रयोग" से मिलकर हो सकता है। दृष्टांत का स्थान दृष्टांत को बताने के *अवसर* को बता सकती है, या दृष्टांत को बताने के समय *परिस्थितियों* का वर्णन कर सकती है। स्थान आम तौर पर दृष्टांत की कहानी से *पहले* पाया जाता है और स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग आमतौर पर दृष्टांत की कहानी के *बाद* पाया जाता है।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टांत की संरचना, कहानी और स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग क्या है?

ध्यान दें।

(1) दृष्टांत का स्थान लूका अध्याय 15 और 16 में शामिल है।

लूका अध्याय 15 में, यीशु ने खोई हुई भेड़, खोए हुए सिक्के और खोए हुए बेटे के बारे में तीन दृष्टांतों को बताया, जिसमें उन्होंने संसार में भटके हुए लोगों के प्रति परमेश्वर के दृष्टिकोण के बारे में सिखाया। यह चुंगी लेने वालों और पापियों के प्रति व्यवस्था के फरीसियों और शिक्षकों के बुरे रवैये के जवाब में था। इन तीन दृष्टांतों में, यीशु ने *लोगों के प्रति गलत रवैये को* उजागर किया!

लूका अध्याय 16 में, यीशु ने दो दृष्टांत बताए। कुशल प्रबंधक के दृष्टांत में, यीशु ने *भौतिक संपत्ति के पापपूर्ण उपयोग को* उजागर किया। लूका 16:1 के अनुसार, इस दृष्टांत से यीशु ने शिष्यों के बड़े समूह को संबोधित किया था, हालाँकि यह निश्चित

रूप से सुना गया था और फरीसियों के लिए भी था (लूका 16:14)।

लूका 16 के तीन संबंधित भाग हैं।

- वचन 1-13 भौतिक संपत्ति के पापपूर्ण उपयोग को उजागर करता है।
- वचन 14-18 पैसे के प्रेमियों के पाखंड को उजागर करता है।
- वचन 19-31 लोगों और धन दोनों के गलत उपयोग के भयानक परिणाम सिखाता है, इस प्रकार, लूका अध्याय 15 और 16 के विषयों का एक संयुक्त रूप है।

(2) दृष्टान्त की कहानी लूका 16: 1-8अ में निहित है।

(3) स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग लूका 16:8ब-13 में निहित है।

" संसार की संतान " और "ज्योति की संतान " (लूका 16:8) शब्दों की व्याख्या। ये यहूदी (इब्रानी और अरबी) मुहावरेदार अभिव्यक्तियां हैं। वे इशारा करती हैं कि व्यक्ति या वर्णित ***वस्तुएं*** "के बेट" या "की बेटी" के बाद बताई गई वस्तु के निकट संबंध में है। यह संबंध उदाहरण के लिए "सम्बन्ध" या "सदृश" में से एक हो सकता है:

- "सिय्योन की बेटी" = सिय्योन (इब्रानी: बैट त्सिजोन) (यशायाह 1:8)
- "यरूशलेम की बेटी" (इब्रानी: बैट जेरुशलजिम) = यरूशलेम (यशायाह 37:37)
- "बेबीलोन की बेटी/कसदियों" (इब्रानी: बैट बैबेल/कासिम) = बेबीलोन वासी (यशायाह 47:1)
- "मनुष्य का पुत्र" (इब्रानी: बेन एडम) = पुरुष (यहेजकेल 2:3)।
- "मनुष्य के पुत्र सा = एक मानव/मनुष्य" (अरामी: बार एनश) (दानिय्येल 7:13)।
- "मैंने अपने पुत्र को मिस्र से बाहर बुलाया" (इब्रानी: बेनी) = यशायाह (होश में 11:1)।

और उदाहरण के लिए :

- "संसार की संतानें" (ग्रीक: होइ हुइवी तो आइओनोस) गैर-मसीहियों को संदर्भित करता है जो पापी और अंधेरी दुनिया से संबंधित हैं
- "ज्योति की संतानें" (ग्रीक: टॉस हुइओस तो फोटोस) उन मसीहियों को संदर्भित करता है जो ज्योति (यीशु मसीह) से संबंधित हैं और देखने में यीशु मसीह के समान हैं। उनके पास ज्ञान, पवित्रता, आनंद आदि का प्रकाश होता है (लूका 16:8ब; 1थिस्सलुनीकियों 5:5)। वे "इस युग के पुत्रों" जो इस संसार के लोग हैं, के साथ एक तीव्र अंतर बनाते हैं (लूका 16:8अ)। इस प्रकार, यीशु का कहना है कि अक्सर गैर-मसीही लोग मसीही की तुलना में अधिक दूरदर्शिता के साथ कार्य करते हैं।

"अधर्म के प्रबंधक" शब्द की व्याख्या (लूका 16:8)। यह बेईमान प्रबंधक को संदर्भित करता है। तथ्य यह है कि यीशु ने प्रबंधक को अपनी कहानी में अधर्मी या बेईमान कहा है, यह साबित करता है कि यीशु ने सांसारिक धन का उपयोग करने में बेईमानी की सराहना नहीं की है! इसके अलावा 10-12 साबित करते हैं कि यीशु बेईमानी की तारीफ नहीं करते हैं।

"अधर्म की दौलत" शब्द की व्याख्या (लूका 16:9)। यह सांसारिक धन, संपत्ति या धन का व्यक्तिकरण है। यीशु यह नहीं कहते हैं कि धन, संपत्ति और धन अपने आप में अधर्मी या बुरे हैं, लेकिन उनका यह कहना है कि अक्सर धन और धन के संचय में और बहुत से अधर्म का उपयोग होता है (1थिस्सुनीकियों 6:9-10)! इसलिए, इस शब्द का अनुवाद सांसारिक धन

के साथ किया जाता है ताकि यह दिखाया जा सके कि यह अस्थायी भौतिक धन को संदर्भित करता है जो कि शाश्वत और सच्चे स्वर्गीय धन (लूका 16:11) के विपरीत है।

"कि वे आपका अनन्त आवासों में स्वागत कर सकते हैं (वशीभूत, अदृष्टिकालीन मध्य)" अभिव्यक्ति की व्याख्या (लूका 16: 9)। अभिव्यक्ति का अर्थ है कि वे लोग जो धरती पर आपके धन के निवेश से लाभान्वित हुए हैं वे भविष्य में स्वर्ग में आपका स्वागत या सत्कार कर सकते हैं (तुलना करें, 2 कुरिन्थियों 5:1)। यह वचन 4 के विपरीत है, जहां वे लोग बेईमान प्रबंधक की धोखाधड़ी से लाभान्वित हुए हैं, जो बेघर होने पर इस प्रबंधक को अपने सांसारिक घरों में बुला या स्वागत कर सकते हैं।

यह शब्द या गद्यांश यह नहीं सिखाता है और न ही सुझाव देता है कि कुछ लोगों के शरीर को फिर से जीवित किया जाएगा और दूसरों के सामने स्वर्ग में ले जाया जाएगा (कलीसिया के तथा कथित "रैप्चर")। ज़्यादातर यह उन लोगों की आत्माओं की बात करता है, जिन्हें धरती पर आपके धन के निवेश से लाभ हुआ है, स्वर्ग में परमेश्वर के सामने वह पृथ्वी पर आपके अच्छे कर्मों को स्वीकार करेंगे। उसी संदर्भ में अगर हम देखें तो , लाजर की आत्मा अमीर आदमी का स्वर्ग में ऐसा स्वागत नहीं कर सकती थी, क्योंकि अमीर आदमी ने पृथ्वी पर गरीब लाजर के जीवन में अपने धन का कोई भी निवेश नहीं किया था (लूका 16:23-25)।

अनुप्रयोग। दुनिया के लोगों के समान चतुर बनो। लूका 16:8ब में, यीशु ने कहा, "क्योंकि इस संसार के लोग अपने समय के लोगों के साथ (रीति-व्यवहारों में) ज्योति के लोगों से अधिक चतुर हैं।" स्वामी ने अपने बेईमान प्रबंधक की प्रशंसा की क्योंकि उसने चतुराई से काम लिया था। यीशु बेईमान प्रबंधक की प्रशंसा करने में सहमत थे, उसकी बेईमानी की नहीं, उसने भविष्य के लिए योजना बनाने में उसकी चतुराई की प्रशंसा की । यीशु ने कहा कि मसीहियों को भी ऐसा ही करना चाहिए: दूरदर्शिता के साथ अपने भविष्य के लिए अच्छी योजनाएँ बनाना चाहिए !

इस प्रकार, यीशु अपने शिष्यों को दुनिया में गैर-मसीहियों के समान चतुर (चतुर, तेज, बुद्धिमान) होना सिखा रहे थे । उन्हें आज भी और भविष्य में भी चतुर होना चाहिए। हालांकि एक अंतर है: मसीही और गैर-मसीही के बीच। गैर-मसीही अपना भविष्य कुटिलता (बेईमानी) से तय करते हैं, जबकि मसीही अपने भविष्य की योजना ईमानदारी (न्याय) (परमेश्वर के राज्य के मानदंड और मूल्य) के साथ बनाते हैं।

अनुप्रयोग। मित्रों को पाने के लिए सांसारिक धन का उपयोग करें। लूका 16:9 में यीशु ने कहा, "मैं तुम से कहता हूं कि अधर्म के धन से अपने लिए (मित्र बना लो), इसलिए जब वह जाता रहे तो वे तुम्हें अन्नत निवासों में ले लें।" यीशु ने अपने शिष्यों को अपने भविष्य को देखने, योजना बनाने और कार्य करने की शिक्षा दी। सांसारिक धन, संपत्ति और धन के माध्यम से, दुनिया के लोग दोस्त बनाते हैं। यही है, जिससे वे खुद के लिए संपर्कों का एक जाल बनाते हैं जिनके माध्यम से वे इस दुनिया में लाभ कमा सकते हैं या सफल हो सकते हैं। लेकिन अक्सर उनके दोस्त केवल तभी तक टिकते हैं जब तक उनके पास पैसा होता है (नीतिवचन 19:4)। और क्योंकि वे अक्सर बेईमानी से व्यापार करते हैं, जैसे रिश्वत और धोखा, जिसके कारण उनके बहुत सारे दुश्मन भी बन जाते हैं। इसके अलावा, उनके सभी प्रयासों का केवल अस्थायी मूल्य होता है, क्योंकि उनके संपर्क, मुनाफे और सफलता केवल उनकी मृत्यु तक होती है। उनके पास स्वर्ग में कोई अनंत निवास नहीं होगा और उनका स्वागत करने के लिए स्वर्ग में कोई भी नहीं होगा।

इसके विपरीत, उनके सांसारिक धन, संपत्ति या धन के माध्यम से, मसीहियों को भी वास्तविक दोस्त बनाना चाहिए। जब तक वे धरती पर रहते हैं, उन्हें अपने सांसारिक धन का उपयोग परमेश्वर के राज्य को आगे बढ़ाने के लिए करना चाहिए। जब वे मर जाते हैं, तो वे सभी लोग जो धरती पर आपकी कृपा से लाभान्वित हुए थे, स्वर्ग में आने पर उनका बड़ा स्वागत करेंगे! मसीहियों को अपने अनंत भविष्य के लिए आगे की योजना बनानी चाहिए और अपने वर्तमान संसाधनों को अनंत काल तक देखना चाहिए! इस प्रकार, यीशु ने अपने शिष्यों को परमेश्वर के राज्य के लिए लोगों को जीतने, परमेश्वर के राज्य में लोगों का निर्माण करने, परमेश्वर के राज्य में ज़रुरतमंदों की मदद करने, संक्षेप में, कुछ भी करने के लिए सिखाया जो कि परमेश्वर के राज्य और महिमा को पृथ्वी पर आगे बढ़ाएगा। मसीही वास्तव में इस तरह से पृथ्वी पर अपने धन (संपत्ति) का प्रबंधन करके स्वर्ग में अपने धन का निवेश करते हैं (तुलना करें, सभोपदेशक 11:1; मत्ती 6: 19-21; 1तीमुथियुस 6:17-19)।

अनुप्रयोग। थोड़े में और बहुत में भरोसेमंद बनो। यह संपत्ति और ज़िम्मेदारियों को संदर्भित करता है। लूका 16: 10-12 में, यीशु छोटे मामलों में, अर्थात् सांसारिक संपत्ति और धन में भरोसेमंद और ईमानदार होने पर जोर देते हैं। लूका 16:10 में उन्होंने कहा, "जो थोड़े से थोड़े में सच्चा है(वस्तुतः एक बहुत छोटी, महत्वहीन या अभिप्रायहीन बात में), वह बहुत में भी सच्चा है ", ठीक इसी प्रकार बड़ी, महत्वपूर्ण और सार्थक बातों के साथ भी है। अस्थायी सांसारिक धन, संपत्ति और धन तुलनात्मक रूप से तुच्छ और निरर्थक होते हैं अर्थात जब उनकी तुलना अनन्त स्वर्गीय संपत्ति से की जाती है। छोटे मामलों में भरोसेमंद होने से बड़े मामलों में विश्वासयोग्यता आएगी। परमेश्वर द्वारा एक मसीही को सौंपी गयी सांसारिक संपत्ति का बुद्धिमानी और व्यावहारिक तरीके से उपयोग करने से ,परमेश्वर अपने राज्य में इससे कहीं अधिक स्वर्गीय संपत्ति के लिए उस पर विश्वास करेंगे। परमेश्वर द्वारा एक मसीही को सौंपी गयी सांसारिक संपत्ति और धन के प्रबंधन में ज़िम्मेदार और प्रभावी होने पर, परमेश्वर उसे अपने राज्य में स्वर्गीय संपत्ति के प्रबंधन की बड़ी ज़िम्मेदारी सौंपेगे।

वचन 11-12 में, इस प्रकार से समानता है: "अधर्म की धन-संपत्ति" (सांसारिक धन) "किसी और की संपत्ति" के समानांतर है और *सांसारिक संपत्ति* और धन को संदर्भित करती है, जो हमेशा परमेश्वर का है, भले ही वह इसे बुद्धिमानी और जिम्मेदारी से उपयोग करने के लिए हमें सौंपता है। और "सच्चा धन" "अपनी खुद की संपत्ति" के साथ समानांतर है, और *स्वर्गीय संपत्ति* को संदर्भित करता है, जो कि परमेश्वर का राज्य है जो परमेश्वर विश्वासियों को उनकी विरासत के रूप में देता है (मत्ती 25:34; इब्रानियों 12:28)।

जब एक मसीही दिखाता है कि वह भरोसेमंद है, अर्थात्, वह सांसारिक संपत्ति और धन का बुद्धिमानी और ज़िम्मेदारी से उपयोग करता है, तो परमेश्वर भी उसे सच्चा धन सौंप देते हैं , जिसमें परमेश्वर का राज्य है, जो पृथ्वी की रचना के साथ मसीहियों के लिए तैयार किया गया है और इस प्रकार उस पर उनका अधिकार है! इस प्रकार, यीशु अपने शिष्यों को सिखाते हैं कि वे जो उनको पृथ्वी पर दिया गया है वे उसका प्रबंधन कैसे करते हैं और नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में उनको प्रबंधन के लिए क्या सौंपा जाएगा,इन दोनों बातों के बीच घनिष्ठ संबंध है। एक निश्चित सीमा तक यह सच है कि, परमेश्वर के राज्य की विरासत तब शुरू होती है जब कोई व्यक्ति मसीह में विश्वास करता है (यूहन्ना 3:3-8), और इस प्रकार एक भरोसेमंद मसीही को यहां पहले से ही वर्तमान काल में पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य में अनेकों मामलों, या कलीसिया में मसीहियों और मसीही गतिविधियों के प्रबंधन के का काम सौंपा जाएगा। । लेकिन ज़ोर इसके अंतिम चरण, नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में परमेश्वर के राज्य की विरासत पर दिया गया है। मसीहियों के लिए नियम दृष्यमान वस्तुओं (जो कि अस्थायी है) पर अपनी आँखें टिकना नहीं है, लेकिन अदृश्य वास्तविकता पर (जो शाश्वत है) (2 कुरिन्थियों 4:18; 5:7)।

अनुप्रयोग। आप एक ही समय में परमेश्वर और संपत्ति (धन) की सेवा नहीं कर सकते। लूका 16:13 में, यीशु ने ज़ोर दिया कि एक मसीही एक ही समय में परमेश्वर और धन की सेवा नहीं कर सकता। जो व्यक्ति थोड़ी देर के लिए कल्पना करता है कि वह परमेश्वर और धन दोनों की स्वामी के रूप में सेवा करने में सक्षम है उसका मनोवैज्ञानिक तनाव जो उस व्यक्ति की आत्मा में बनता है, इतना गंभीर और असहनीय हो जाता है, कि वह जल्द ही या बाद में उसके स्वभाव, बातों और व्यवहार में दिखने लगता है की उसकी असली असली निष्ठा कहाँ है। कुछ लोग सोचते हैं कि वे पैसे बनाने के लिए परमेश्वर का उपयोग कर सकते हैं या वे अमीर बनने के लिए परमेश्वर की आराधना कर सकते हैं (1तीमुथियुस 6:5)। लेकिन यीशु अपने शिष्यों को सिखाया कि वे परमेश्वर को प्रेम करने और उनकी सेवा करने के लिए चुनें, जिसमे परमेश्वर के कामों को पूरा करने के लिए इस संसार में उनकी सांसारिक संपत्ति और धन का उपयोग करना भी शामिल है ।

---

3. दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।

परिचय। यीशु ने कुछ आध्यात्मिक महत्व रखने के दृष्टान्त की कहानी में हर विवरण का को देने का इरादा नहीं किया है। दृष्टांत रूपक नहीं हैं। प्रासंगिक विवरण दृष्टांत की कहानी में वे विवरण हैं जो केंद्रीय बिंदु या मुख्य विषय या दृष्टांत के पाठ को सुदृढ़ करते हैं। इसलिए, हमें दृष्टांत की कहानी के प्रत्येक विवरण के लिए स्वतंत्र आध्यात्मिक महत्व का वर्णन नहीं करना चाहिए।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टांत की कहानी में कौन सा विवरण वास्तव में आवश्यक या प्रासंगिक है?

ध्यान दें। यीशु किसी भी विवरण को कोई विशेष अर्थ नहीं देते हैं। इस दृष्टांत में कई विवरण हैं जिन्हें कोई विशेष अर्थ नहीं दिया जाना चाहिए।

एक धनवान व्यक्ति । यह एक प्रासंगिक विवरण नहीं है। *धनी व्यक्ति* को यीशु मसीह या धन-संपत्ति या किसी और का प्रतिनिधित्व करने के रूप में नहीं समझा जाना चाहिए।

एक प्रबन्धक । यह प्रासंगिक है, क्योंकि वह इस दृष्टांत में केंद्रीय व्यक्ति है। हालाँकि, वह मसीही का प्रतिनिधित्व नहीं करता है, क्योंकि एक मसीही बेईमान नहीं हो सकता है। बल्कि "बेईमान प्रबंधक" उसके विपरीत है जैसा की एक मसीही को होना चाहिए !

स्वामी ने उस अधर्मी भंडारी को सराहा कि उसने चतुराई से काम किया है। यह प्रासंगिक है। न तो प्रबंधक और और न उसके बेईमान होने की विशेषता, प्रासंगिक है। जो प्रासंगिक है वह चतुर होने की उसकी विशेषता है। उनकी दूरदर्शिता, तेज विवेक और अपने भविष्य को सुरक्षित करने के लिए सांसारिक संपत्ति और धन का उपयोग करने में व्यावहारिक ज्ञान, इस दृष्टान्त का केंद्रीय बिंदु या मुख्य संदेश है और इस प्रकार बहुत प्रासंगिक है। जिस प्रकार सांसारिक स्वामी ने पृथ्वी पर इस प्रबंधक के व्यावहारिक ज्ञान की प्रशंसा की, उसी प्रकार हमारे स्वर्गीय पिता अपनी सांसारिक संपत्ति और धन का उपयोग करके धरती पर परमेश्वर के राज्य को आगे बढ़ाने के लिए मसीहियों के व्यावहारिक ज्ञान की सराहना करते हैं।

ऋणी और उनके ऋण। यह प्रासंगिक नहीं है। अमीर आदमी के ऋणी और उनके ऋण की राशियों का कोई खास मतलब नहीं है। ये केवल विवरण हैं जो दृष्टांत की सुंदरता को बढ़ाते हैं।

---

4. दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहचानें।

परिचय। दृष्टांत का मुख्य संदेश या तो स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग में या कहानी से ही मिला है। जिस तरह से यीशु मसीह ने स्वयं दृष्टांतों को समझाया या लागू किया है, हम जानते हैं कि हमें दृष्टान्तों की व्याख्या कैसे करनी चाहिए। *एक दृष्टांत में सामान्य रूप से केवल एक मुख्य पाठ होता है, बनाने के लिए एक केंद्रीय बिंदु।* इसलिए, हमें कहानी के प्रत्येक विवरण में एक आध्यात्मिक सच्चाई खोजने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, बल्कि एक मुख्य पाठ की तलाश करनी चाहिए।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

लूका 16:1-13 में चतुर प्रबंधक का दृष्टांत "परमेश्वर के राज्य में प्रबंधन" के बारे में सिखाता है ।

दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "मसीहियों को अनंतकाल के लिए खुद के दोस्त बनाने के लिए अपनी सांसारिक संपत्ति का उपयोग करने में समझदार (चतुर, तेज) होना चाहिए।" चतुर होने का मतलब है "दूरदर्शिता (दृष्टि) विवेक और व्यावहारिक ज्ञान के साथ परमेश्वर के राज्य के लिए अपने आप को समर्पित करना।

प्रबंधक होना परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोग अपनी सांसारिक संपत्ति और धन का उपयोग वर्तमान समय में परमेश्वर के राज्य को आगे बढ़ाने और परमेश्वर के राज्य के लिए लोगों को जीतने के लिए करते हैं। सांसारिक संपत्ति के बुद्धिमानी और ज़िम्मेदार तरीके से उपयोग को निश्चित रूप से पुरस्कृत किया जाएगा। सभी लोग, जो परमेश्वर के राज्य में जीते गए हैं या जिन्होंने मसीहियों की सांसारिक संपत्ति के बुद्धिमानी और ज़िम्मेदार उपयोग के कारण आध्यात्मिक रूप से लाभ उठाया है, स्वर्ग में आने पर इन मसीहियों का स्वागत करेंगे!

एक निश्चित सीमा तक, एक भरोसेमंद मसीही को इस संसार में पहले से ही परमेश्वर के राज्य के मामलों का प्रबंधन या कलीसिया में मसीहियों की देखभाल का काम सौंपा गया है । फिर भी, अपने अंतिम चरण, नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में परमेश्वर के राज्य की विरासत पर जोर दिया गया है। परमेश्वर के राज्य के लोग अपनी आंखों को चीज़ों पर नहीं बल्कि अप्रत्यक्ष चीज़ों पर लगाते हैं । जो प्रत्यक्ष है वह अस्थायी होता है, लेकिन जो अप्रत्यक्ष है वह अनंत है।

---

5. बाइबल में समानांतर और विपरीत मार्गों के साथ दृष्टांत की तुलना करें।

परिचय। कुछ दृष्टान्त एक दूसरे के समान हैं और उनकी तुलना की जा सकती है। हालाँकि, सभी दृष्टान्तों में सच्चाई के समानांतर या विपरीत सत्य है जो बाइबल के अन्य अंशों में पढ़ाया गया है। सबसे महत्वपूर्ण सम्बंधित-संदर्भ खोजने की कोशिश करें जो हमें दृष्टांत की व्याख्या करने में मदद करते हैं। हमेशा बाइबल की प्रत्यक्ष स्पष्ट शिक्षा के साथ दृष्टान्त की व्याख्या की जाँच करें।

खोजें और चर्चा करें। बाइबल में से दिए गए प्रत्येक अनुच्छेद की शिक्षाओं की तुलना चतुर प्रबंधक के दृष्टान्त की शिक्षाओं से कैसे की जा सकती है ?

(1) चतुर प्रबन्धक का दृष्टान्त (लूका 16: 1-13)।

चतुर क प्रबंधक का दृष्टांत सिखाता है कि एक मसीही को *चतुर होना* चाहिए। मसीहियों को दूरदर्शिता, विवेक और व्यावहारिक ज्ञान के साथ अपनी संपत्ति और धन का उपयोग करना चाहिए। एक मसीही आध्यात्मिक वास्तविकता पर लगातार ध्यान केंद्रित करने के लिए ज़िम्मेदार है, हालांकि जो दिखता नहीं वह एक अनंत वास्तविकता है (2कुरिन्थियों 4:18; 5:7)।

मत्ती 6:19-24 इससे संबंधित ज़िम्मेदारी को सिखाता है। उसे लगातार धरती पर नहीं वरन स्वर्ग में खजाना जमा करना चाहिए। स्वर्ग में उसके खजाने को कोई भी नष्ट नहीं कर सकता। बेशक, मसीही को यह काम एक ईमानदार, बुद्धिमान और ज़िम्मेदार तरीके से करना चाहिए। सच्ची व मूल्यवान संपत्ति को बढ़ाने का तरीका यह है कि आप सांसारिक वस्तुओं को मसीह और उसके राज्य की खातिर और उचित कारणों के लिए दे दें।

(2) धनवान मूर्ख का दृष्टांत (लूका 12:13-21)।

धनवान मूर्ख का दृष्टांत सिखाता है कि एक मसीही को अपने धन, संपत्ति या वस्तुओं के संबंध में *निःस्वार्थ* होना चाहिए। उसे अपने लिए नहीं जीना चाहिए, लेकिन अपने जीवन के हर पहलू में परमेश्वर के साथ सम्मिलित होना चाहिए। उसे परमेश्वर पर अपनी निर्भरता के प्रति पूरी तरह सचेत होना चाहिए।

(3) धनवान मनुष्य और निर्धन लाजर का दृष्टांत (लूका 16:19-31)।

दिखावा करने वाले अमीर और भिखारी लाजर का दृष्टांत सिखाता है कि एक मसीही को सतर्क व ज़िम्मेदार होना चाहिए कि वह *दुनिया में गरीबों और सुविधाओं से वंचित लोगों के साथ कैसे व्यवहार करता है* और वह अपने धन, संपत्ति या धन का उपयोग कैसे करता है। मृत्यु से पहले पृथ्वी पर उसकी जीवन-शैली के संबंध में उसकी ज़िम्मेदारी या ज़िम्मेदारी की कमी के परिणाम मौत के बाद अपरिवर्तनीय हैं! एक मसीही इस दुनिया के खोए हुए, वंचित और तिरस्कृत लोगों के साथ दोस्ती करने के लिए ज़िम्मेदार है।

(4) प्रतिभाओं का दृष्टान्त (मत्ती 25: 14-30)।

प्रतिभाओं अर्थात तोड़ो का दृष्टांत सिखाता है कि एक मसीही को संपत्ति, रिश्ते, योग्यता या अवसरों का उपयोग करने में *विश्वासयोग्य होना* चाहिए, जिसे परमेश्वर ने उसे सौंपा है, भले ही उसे एक प्रतिभा दी गयी हो!

---

6. दृष्टान्त के मुख्य उपदेशों को संक्षेप में बताइए।

चर्चा करें। परमेश्वर के राज्य में नेतृत्व के बारे में दृष्टांत के मुख्य उपदेश या पाठ क्या हैं? यीशु मसीह ने हमें क्या *जानना* या *मानना* सिखाया और उसने हमें क्या *बनना* या *करना* सिखाया?

ध्यान दें।

(1) सभी लोगों को पता होना चाहिए कि परमेश्वर कैसा है।

परमेश्वर ने लोगों को पृथ्वी पर अपनी जिम्मेदारी सौंपी है ताकि वे पृथ्वी के व जो कुछ उस पर है उसके अच्छे प्रबंधक बन सकें। संबंधित दृष्टांतों के द्वारा , यह सिखाता गया है कि परमेश्वर इस दुनिया के सभी मामलों को लेकर बहुत चिंता करते और और स्वयं शामिल हैं। संसार में की साड़ी चीज़ों को परमेश्वर द्वारा बनाया गया है और उसे परमेश्वर द्वारा मनुष्य की देखभाल या नेतृत्व में सौंपा गया है (उत्पत्ति 1:28)। परमेश्वर निश्चित रूप से सभी लोगों को ज़िम्मेदार ठहराएंगे कि उन्होंने परमेश्वर की धरती को और जो कुछ परमेश्वर की धरती पर है उस सब को कैसे प्रबंधित किया है।

(2) मसीहियों को पता होना चाहिए कि उन्हें क्या होना है ।

परमेश्वर न केवल यह मांग करते हैं कि लोग निःस्वार्थ जीवन जिएं, बल्कि वह यह भी चाहते हैं कि परमेश्वर ने उन्हें जो कुछ भी सौंपा है, उसके संबंध में भी वे विश्वासयोग्य और विश्वसनीय बने रहें। यह ये भी सिखाता है कि परमेश्वर यह मांग करते हैं

कि मसीहियों के पास दूरदर्शिता, तेज विवेक और व्यावहारिक ज्ञान है कि वे धन, संपत्ति या धन का उपयोग कैसे करते हैं, जो आखिरकार परमेश्वर का है और जो परमेश्वर ने उन्हें सौंपा है, ताकि वे वर्तमान पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य के हितों की सेवा कर सकें।

कोई भी व्यक्ति यह दावा नहीं कर सकता है कि उसके पास जो कुछ है उस पर उसका विशेष अधिकार है। मनुष्य स्वामी नहीं है, वरन वह तो परमेश्वर की संपत्ति का एक भंडारी है! उसके पास जो कुछ है वह उसे परमेश्वर की ओर से एक विश्वास के रूप में दिया गया है। परमेश्वर उसे ज़िम्मेदार ठहराता है और उसे जो कुछ सौंपा गया है उसे उसका लेखा देने की आवश्यकता होगी।

कोई भी राष्ट्र या संस्था या व्यक्ति यह दावा नहीं कर सकता है कि भूमि का कच्चा माल विशेष रूप से उसका है। वे इन कच्चे माल के केवल भंडारी हैं। किसी भी संस्था को वर्षावन, प्रदूषित नदियों को नष्ट करने, मछली पकड़कर समुद्र को खाली करने या पृथ्वी पर सभी जंगली जानवरों को मारने आदि का अधिकार नहीं है। पृथ्वी पर सब कुछ परमेश्वर का है और प्रत्येक सरकार, संस्था या व्यक्ति को परमेश्वर के भरोसे के प्रबंधन का एक लेखा देना होगा। अंतिम न्याय में, परमेश्वर सभी को जिम्मेदार और जवाबदेह ठहराएंगे कि कैसे वे पृथ्वी पर परमेश्वर की संपत्ति के भंडारी रहे हैं!

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[प्रतिक्रियाएँ]*** **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

आज आपने जो कुछ सीखा है, उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से ***छोटी-छोटी प्रार्थना*** करने के लिए समूह में ***बारियाँ लें।*** या समूह को दो या तीन लोगों में विभाजित करें और आज जो आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी करें** (2 मिनट)	***[निर्धारित कार्य]*** **अगले अध्याय के लिए**

(समूह अगुवा। समूह के सदस्यों को इस तैयारी को लिखित रूप में घर ले जाने दें या उन्हें इसकी नकल करने दें)।

1. समर्पण। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर "एक चतुर प्रबन्धक" का प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **यशायाह 55, 58, 59 और 61** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. स्मरण करना। **(2) परमेश्वर का वचन. भजन सहिंता 119:105।** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. बाइबल अध्ययन। घर पर अगला बाइबल अध्ययन तैयार करें। **रोमियों 11:1-36।**
   बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन सहिंता 5:3) ।
7. परमेश्वर के राज्य पर प्रचार करने के लिए अपनी नोटबुक का अद्यतन करें। शांत समय में अपने नोट्स, अपने स्मरण किए हुए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।